युगदृष्टा थे स्वामी विवेकानंद

भारतवर्ष के अमर व्यक्तित्वों और युग प्रवर्तकों में एक अग्रणी नाम है-युग दृष्टा स्वामी विवेकानंद का. भारतीय चिंतनधारा की सही अनुभूति स्वामी जी को प्राप्त थी. इसलिए भारत को विश्व स्तर तक ले जाने का पूरा श्रेय स्वामीजी को जाता है. उनका जन्म 12 जनवरी, 1863 में कोलकाता के सिमुलिया नामक मुहल्ले में दत्त परिवार में हुआ. उनकी माता का नाम भुवनेश्वरी देवी था. अन्न प्राशन संस्कार के दिन उनका नाम नरेंद्रनाथ रखा गया. यही नरेंद्र आगे चलकर विश्व विख्यात स्वामी विवेकानंद बना.

नरेंद्र बचपन से ही जिज्ञासु प्रवृत्ति के थे. कई गंभीर समस्याओं से संबंधित प्रश्न बालक नरेंद्र के मन में उभरते रहे, जिसकी खोज में वे हमेशा रहते थे. बचपन से ही नरेंद्र का शरीर स्वास्थ्यवर्धक था. व्यायाम, खेल-कूद और संगीत में उनकी विशेष रुचि थी. छुआ-छूत, देव-दानव एवं समाज व्यवस्था में प्रचलित रूढ़ि-परंपराओं को देखकर उनका मन विचारों में लिप्त रहता था. इन्हीं समस्याओं को उन्होंने दार्शनिक अनुभूति के माध्यम से बुद्धि और हृदय के संतुलित समन्वय के सहारे खोजने का प्रयास किया. इस बीच, वे आर्य समाज के संपर्क में आए, जिसके चलते उनकी कई सामाजिक समस्याओं का निराकरण हुआ. रामकृष्ण परमहंस के सानिध्य से उन्हें भारतीय दर्शन और सत्य की सही पहचान हो गई. स्वामीजी ने सत्य की खोज में संन्यास ग्रहण किया और संपूर्ण भारत वर्ष का भ्रमण भी किया. इस दौरान आपको भारतीय जनता का यथार्थ रूप अवगत हुआ. इस बीच वे कई विद्वानों के संपर्क में आए और चोर-उच्चकों के भी साथ रहे.. वे संवेदनशील व्यक्तित्व के धनी थे. संवेदनशीलता संबंधी स्वयं उन्हीं का कहना है-शायद आप नहीं जानते कि मैं कठोर वेदांती विचारों का होते हुए भी बहुत कोमल हृदय का हूं और इसी से मेरा बड़ा अनिष्ठ है. थोड़ा ही आघात मुझे विचलित कर देता क्योंकि मैं कितना ही स्वार्थ परायण रहने का प्रयत्न करूं, दूसरे की हानि-लाभ देखते ही मेरा सारा प्रयत्न व्यर्थ हो जाता है. सन् 1893 में शिकागो में हुई धर्म सभा में अपने व्याख्यान में 'भाइयों और बहनों' संबोधित करते ही सारी सभा विवेकानंदजी से काफी प्रभावित हुई. उनके विचार भारत की आदर्श संस्कृति और सभ्यता के नव निर्माण से ओत-प्रोत थे. इन्सानियत, आम जनता की उन्नति, शिक्षा प्रचार और साम्यवाद की खोज उनका प्रण था. उनके नारी विषयक विचार आज भी प्रासंगिक है. वे मानते थे कि धर्म के नाम पर जन-शोषण करना महा पाप है. आलस्य और अंधश्रद्धा के कारण ही भारत पतन की राह पर अग्रसर है. उनका कहना था कि मेरा भारत अमर भारत हो जाए. अमर भारत सहज साकार हो सकता है. इसके लिए जिस मानवता की आवश्यकता है वह स्वामी विवेकानंदजी के विचारों में यह है- सबसे पहले हमें जिन देवताओं की पूजा करनी होगी, वे हैं हमारे देशवासी.

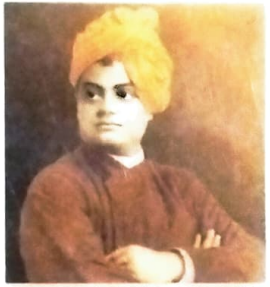

आज जयंती पर विशेष

-शिराज शेख,
शोध छात्र, हिंदी विभाग,
सावित्रिबाई फुले पुणे विवि, पुणे.

लोकमत समाचार, पुणे
सोमवार, 12 जनवरी 2015